

इम्मानुएल

का सपना

सच्ची और

प्रेरक कहानी

इम्मानुएल

का सपना

एक सच्ची और प्रेरक कहानी

लौरी एना थोम्पसन,

चित्र : सीन कुयालिस

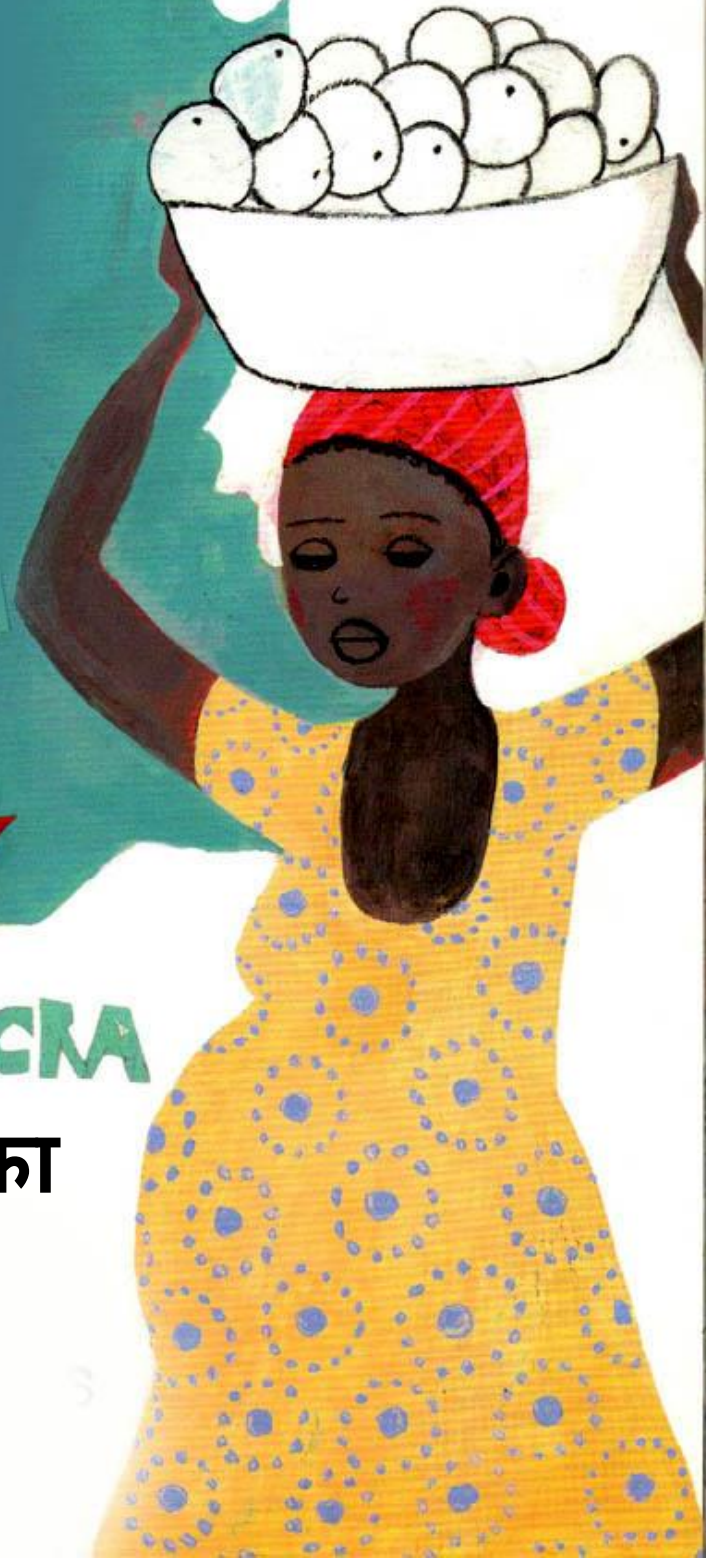
हिंदी – विदूषक

घाना



ACCRA

अक्रा





पश्चिमी अफ्रीका - घाना में, एक बालक का जन्म हुआ.

उसकी दोनों आँखें रोशनी में चमक रही थीं.

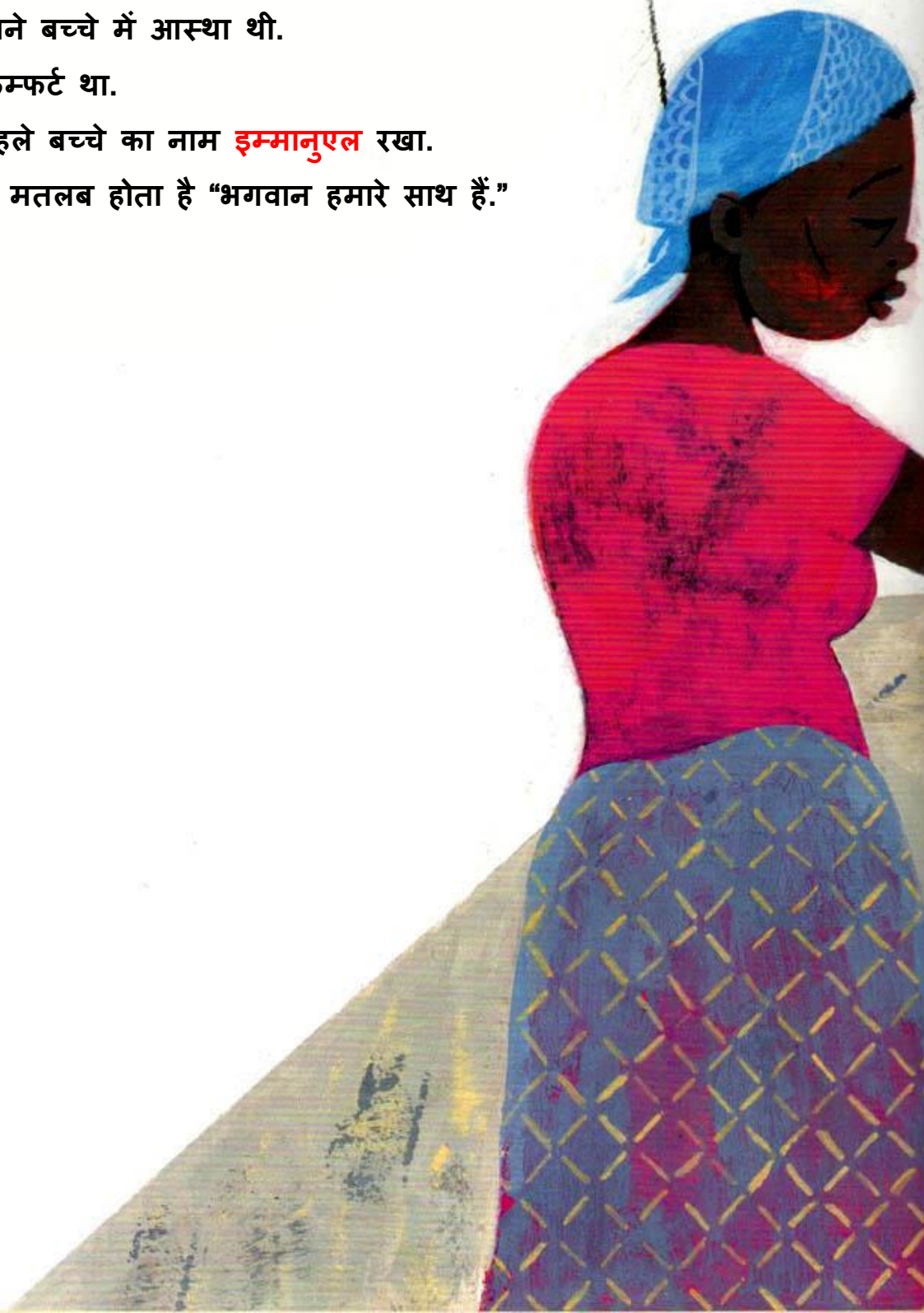
उसके दोनों फेफड़ों से ज़ोरदार रोने की आवाज़ निकल रही थी.

उसकी दोनों छोटी हथेलियाँ खुल रही थीं और बंद हो रही थीं.

पर उसका केवल एक ही पैर चल रहा था.



बहुत से लोग उस बच्चे को देखकर घबराए.
उन्होंने उसे एक अभिशाप माना.
उसका पिता उसे सदा के लिए छोड़ कर चला गया.
पर माँ की अपने बच्चे में आस्था थी.
माँ का नाम कम्फर्ट था.
उसने अपने पहले बच्चे का नाम **इम्मानुएल** रखा.
इम्मानुएल का मतलब होता है "भगवान हमारे साथ हैं."





जब इम्मानुएल बड़ा हुआ
तो माँ कम्फर्ट ने कहा कि वो जो चाहे, उसे पा सकता है,
पर उसके लिए उसे खुद कोशिश करनी होगी.



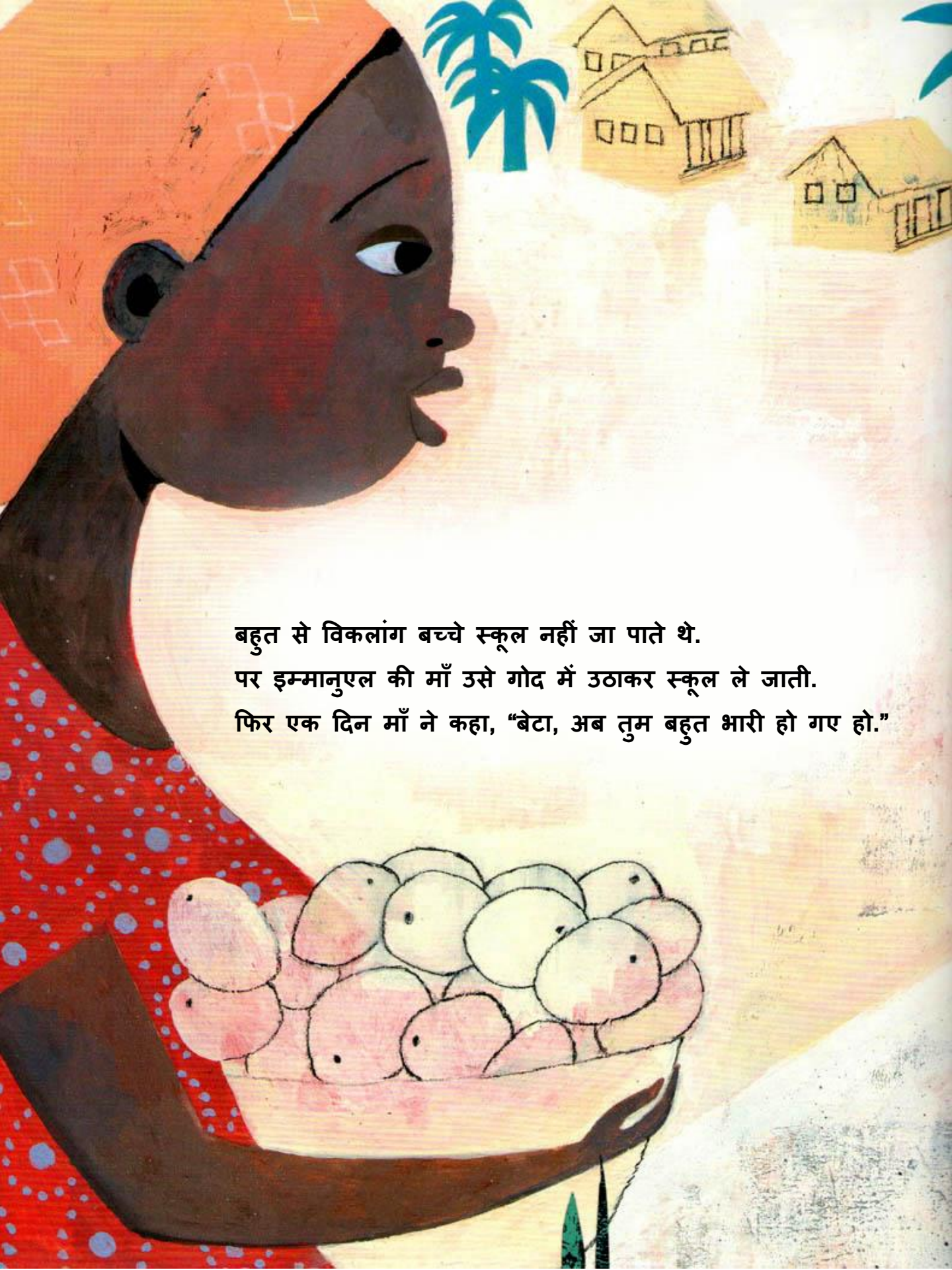
धीरे-धीरे उसने रेंगना और कूदना सीखा.



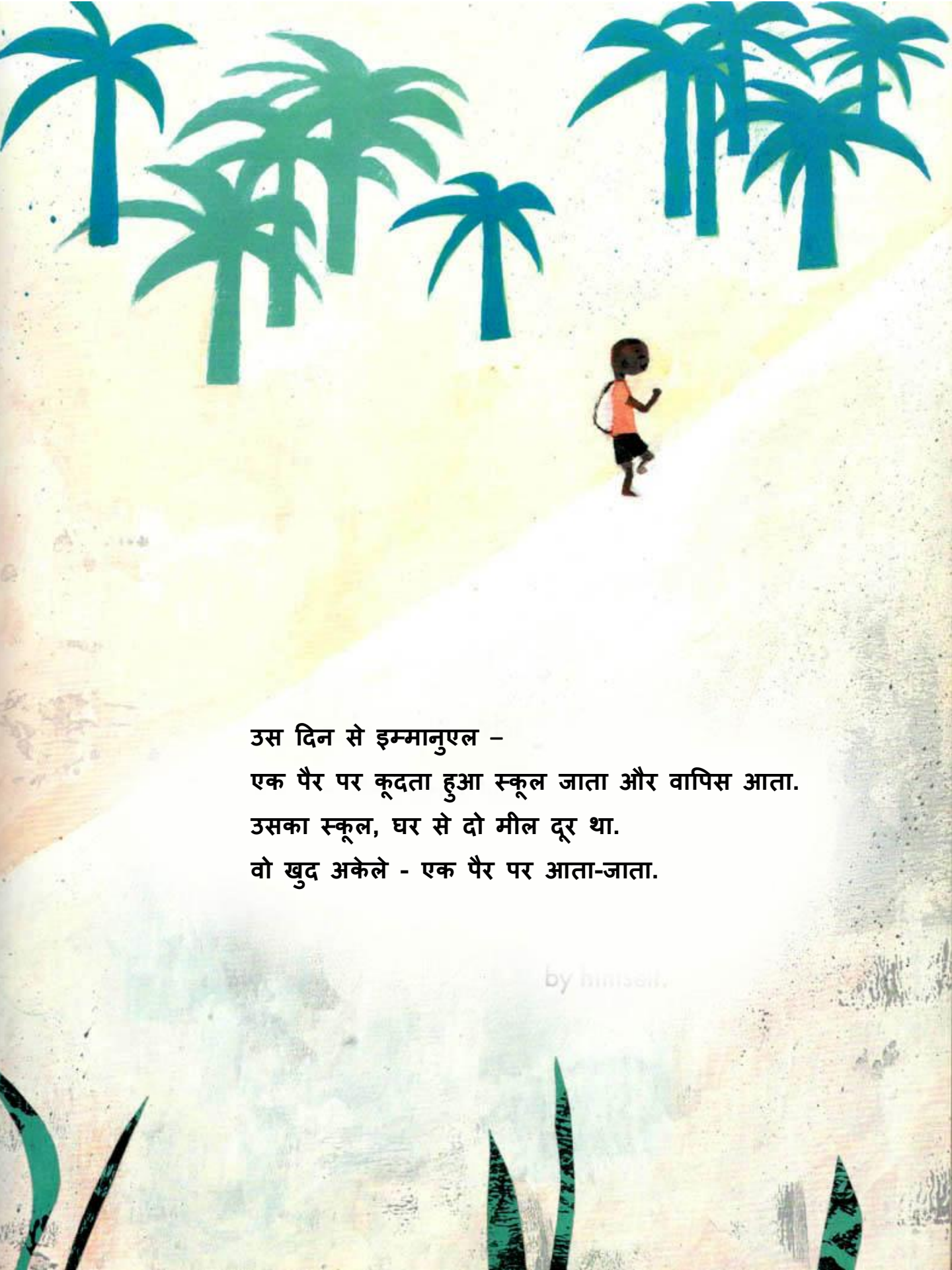
उसने पानी लाना और नारियल
के पेड़ पर चढ़ना सीखा.



उसने पैसे कमाने के लिए जूते भी पॉलिश किए.



बहुत से विकलांग बच्चे स्कूल नहीं जा पाते थे.
पर इम्मानुएल की माँ उसे गोद में उठाकर स्कूल ले जाती.
फिर एक दिन माँ ने कहा, “बेटा, अब तुम बहुत भारी हो गए हो.”




उस दिन से इम्मानुएल -

एक पैर पर कूदता हुआ स्कूल जाता और वापिस आता.

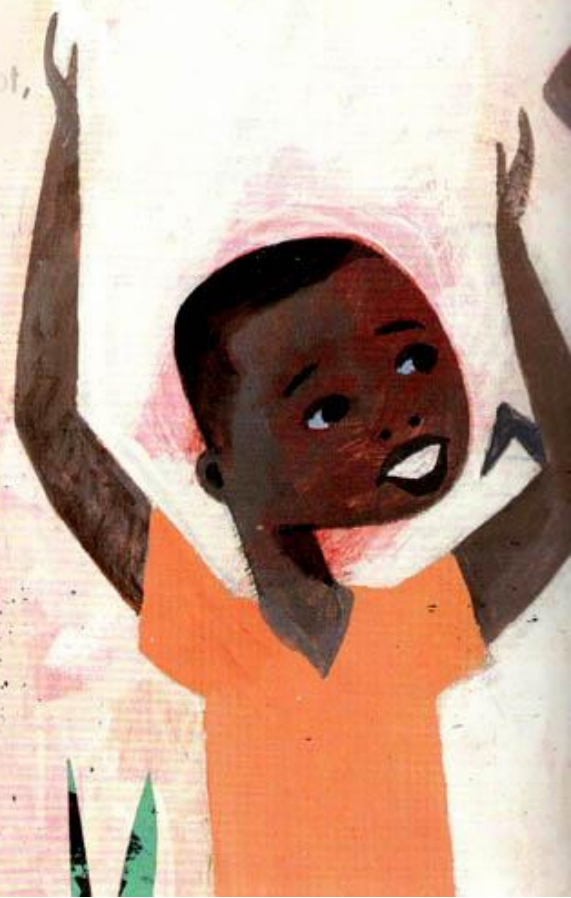
उसका स्कूल, घर से दो मील दूर था.

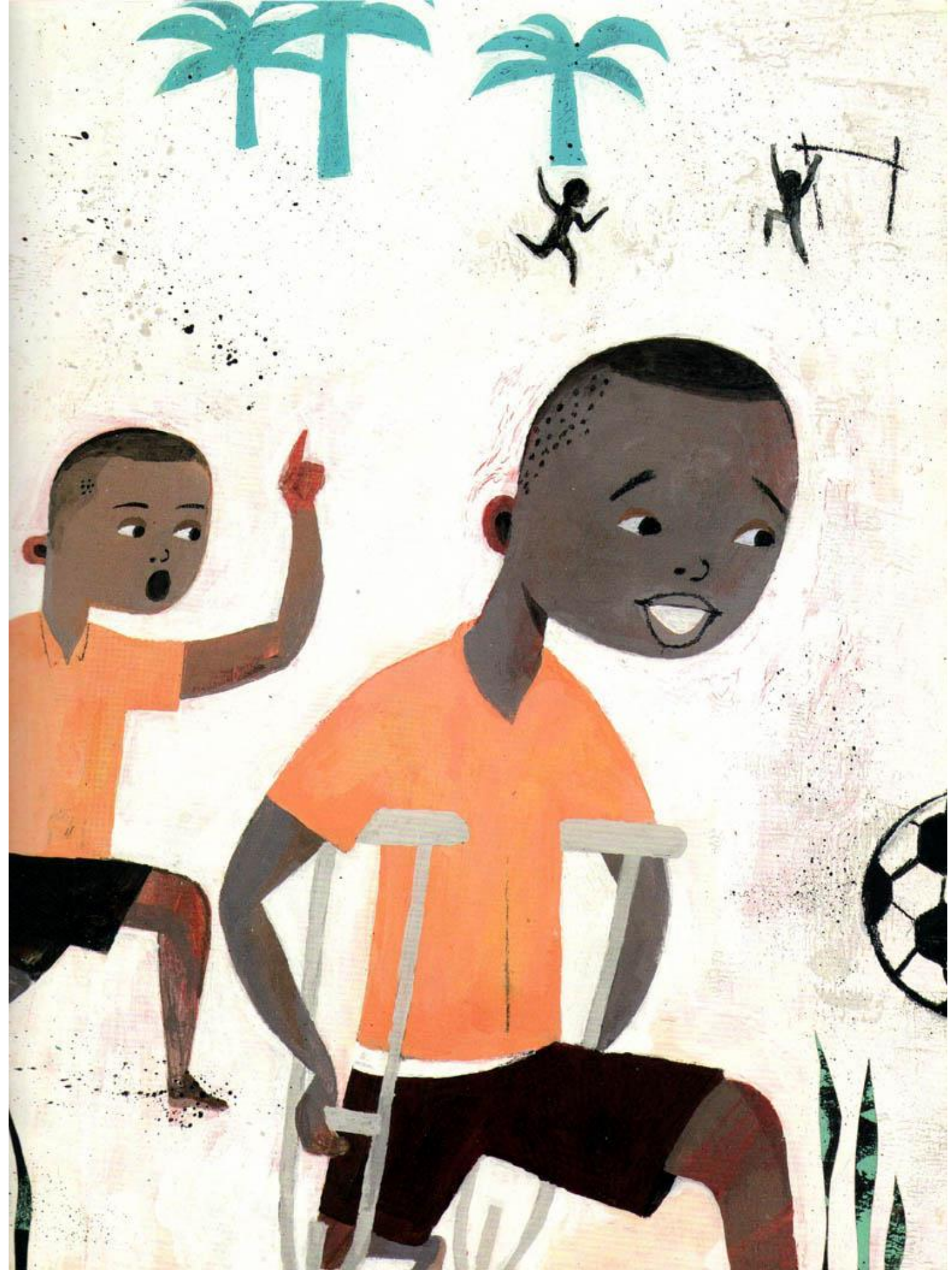
वो खुद अकेले - एक पैर पर आता-जाता.

by himself.



शुरू में उसके साथ कोई नहीं खेलता था.
पर इम्मानुएल ने पैसे बचाए
और फिर एक ऐसी चीज़ खरीदी
जो क्लास में और किसी के पास नहीं थी.
उसने एक नई फुटबॉल खरीदी.
वो अपने दोस्तों को उससे ज़रूर खेलने देगा ...
अगर वो उसे भी अपने साथ खिलाएं.
दादी ने उसके लिए एक बैसाखी दी.
बैसाखी एक सहारे इम्मानुएल अपने अच्छे बाएं पैर से
फुटबाल को किक मारता.
इम्मानुएल के दोस्त अब उसकी इज्ज़त करने लगे.







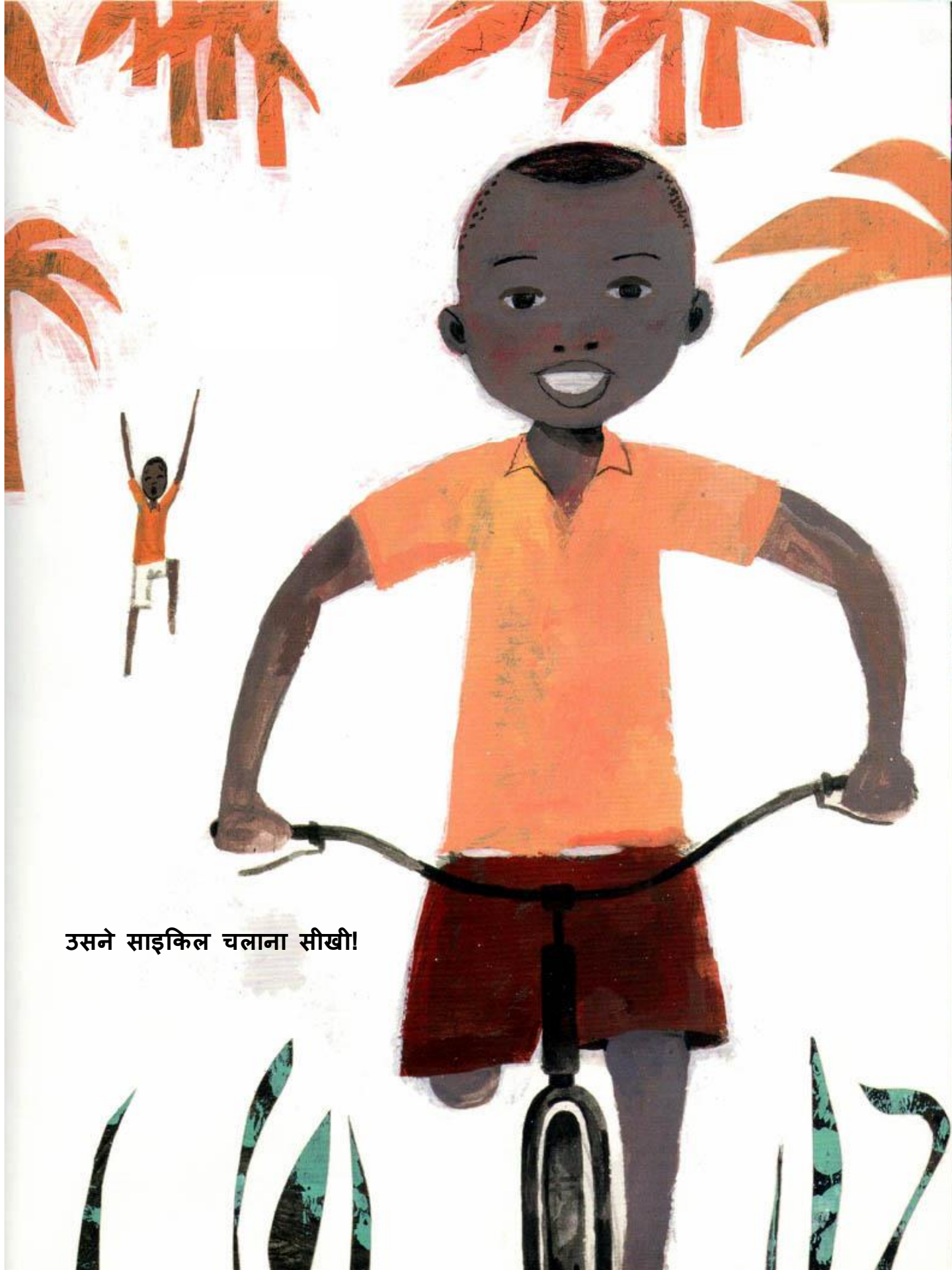
उसके नए दोस्त अक्सर खाने के पैसे बचाकर किराए की साइकिल चलाते.

क्या इम्मानुएल, साइकिल चला पाएगा?

उसके दोस्त गोद्विन ने इम्मानुएल की साइकिल को एक जोर का धक्का दिया, जिससे कि वो साइकिल का संतुलन बना पाए.



इम्मानुएल कई बार ज़ोरों से गिरा भी, पर अंत में



उसने साइकिल चलाना सीखी!

जब इम्मानुएल तेरह साल का था
तो माँ कम्फर्ट बहुत बीमार पड़ीं.
वो अब बाज़ार जाकर सब्जी नहीं बेंच पाती थीं.
इम्मानुएल के भाई-बहन, दोनों बहुत छोटे थे
वो अभी कमाने लायक नहीं थे.





अब इम्मानुएल ही उनका एकमात्र सहारा था.

माँ के बहुत मना करने के बावजूद, इम्मानुएल एक रात ट्रेन में बैठकर
घाना की राजधानी - अक्रा जा पहुंचा.

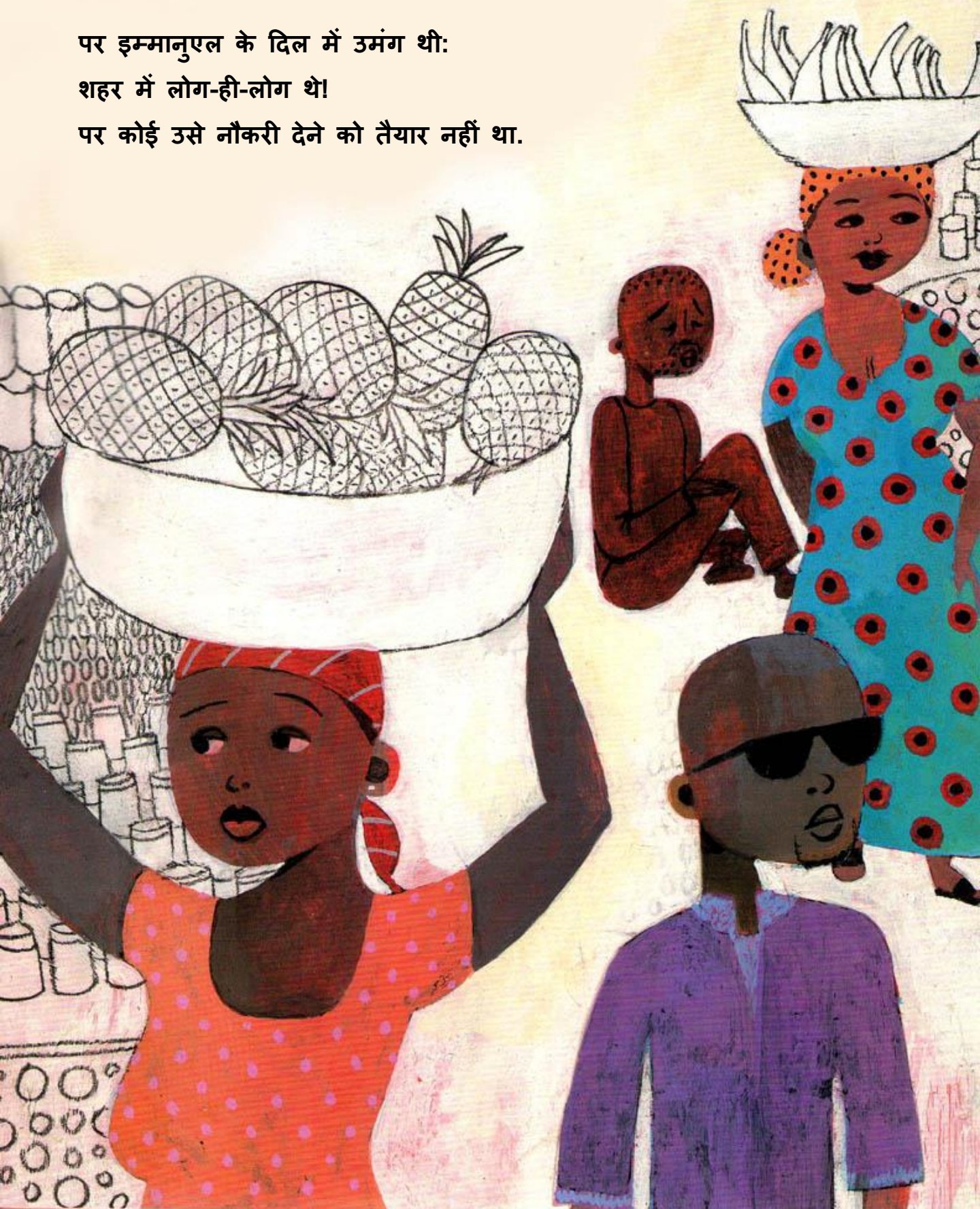
अक्रा, उसके शहर से 150 मील दूर था.

और इम्मानुएल बिलकुल अकेला था.

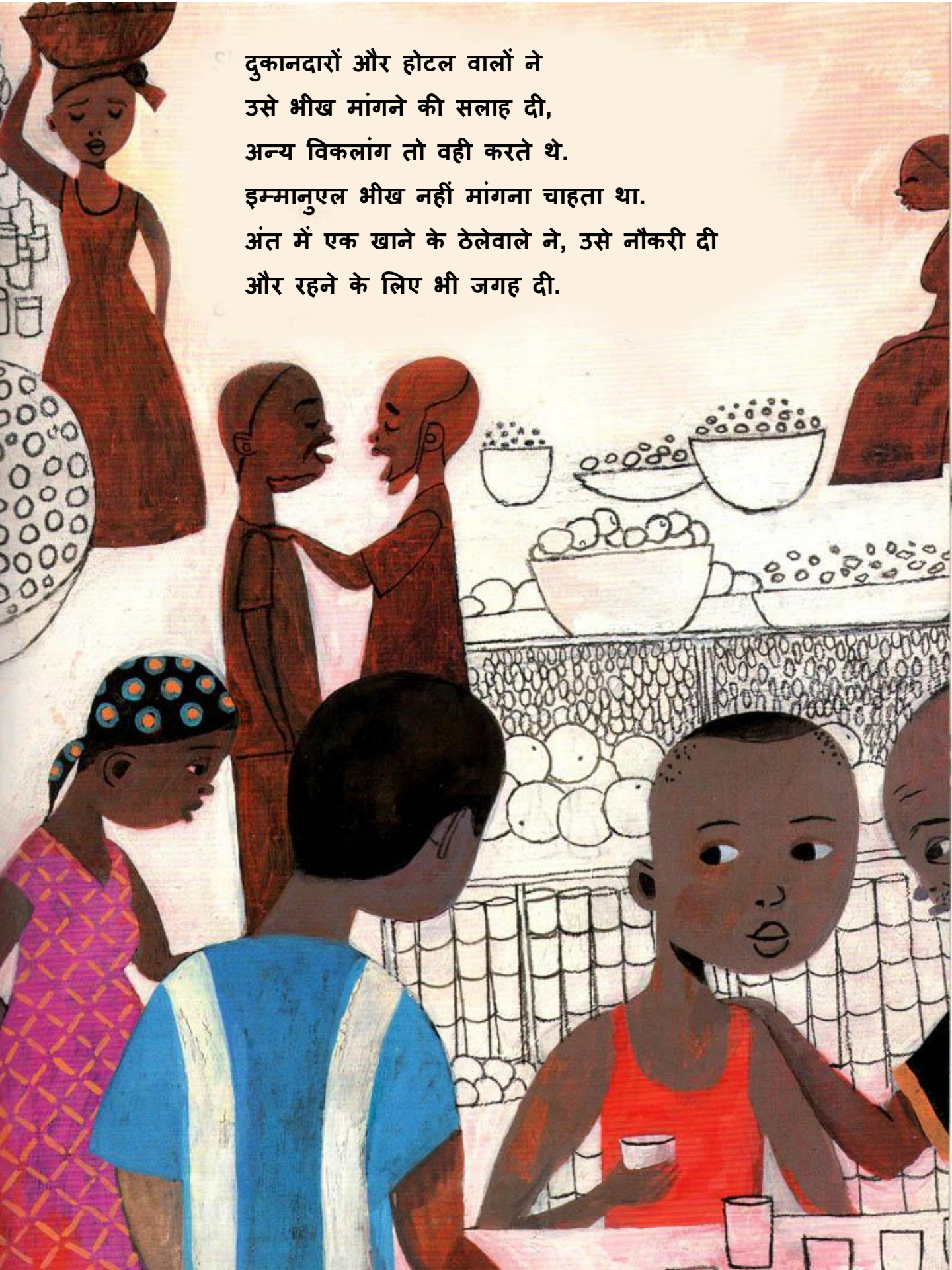
उसे पता नहीं था, कि वो अपने परिवार से

पूरे दो साल बाद ही, दुबारा मिल पाएगा.

पर इम्मानुएल के दिल में उमंग थी:
शहर में लोग-ही-लोग थे!
पर कोई उसे नौकरी देने को तैयार नहीं था.



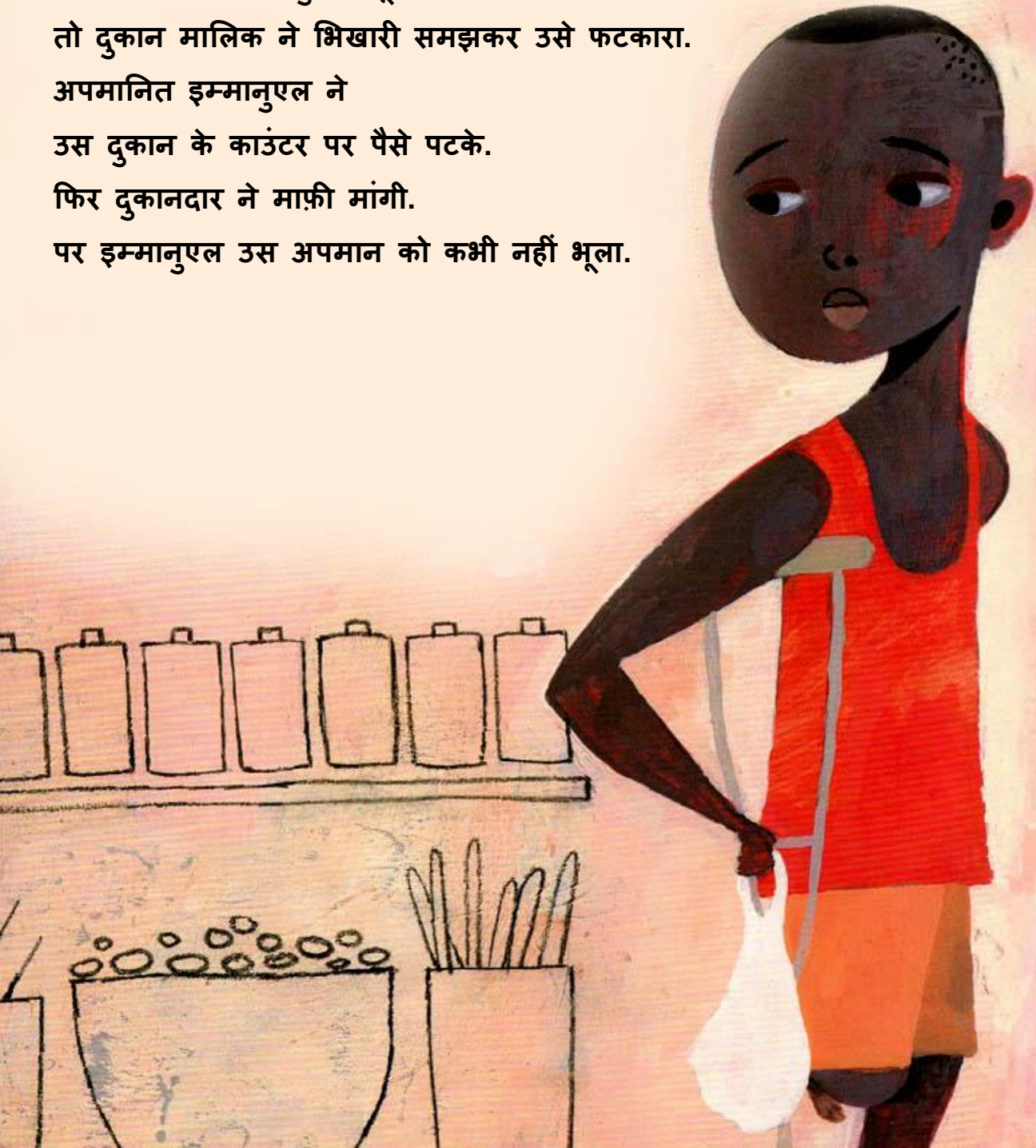
दुकानदारों और होटल वालों ने
उसे भीख मांगने की सलाह दी,
अन्य विकलांग तो वही करते थे.
इम्मानुएल भीख नहीं मांगना चाहता था.
अंत में एक खाने के ठेलेवाले ने, उसे नौकरी दी
और रहने के लिए भी जगह दी.





जब इम्मानुएल ठंडा पेय नहीं बेंच रहा होता
तब वो जूते पॉलिश करता.
वो जो भी पैसे कमाता
उन्हें घर भेजता था.

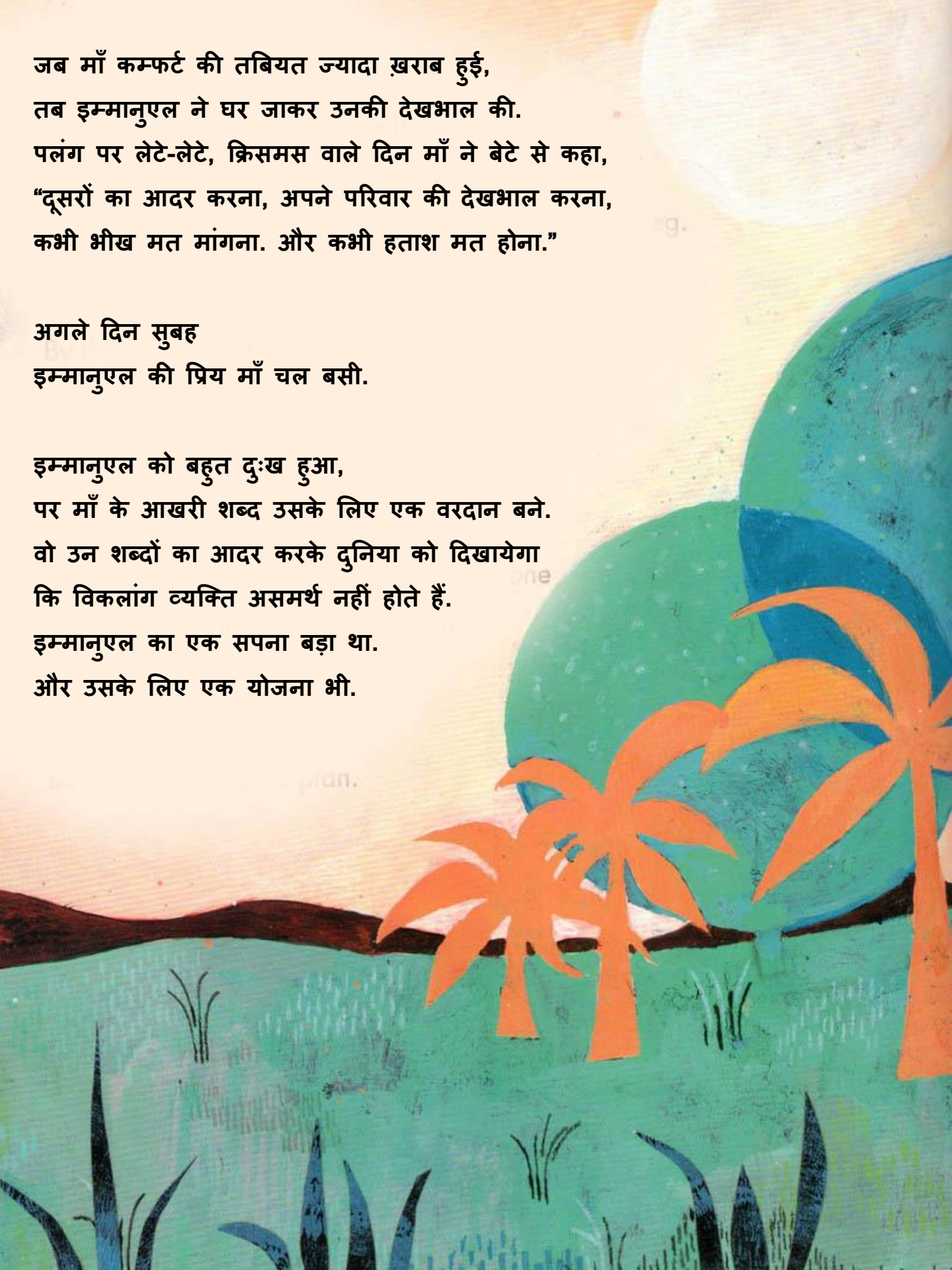
एक दिन जब इम्मानुएल जूते की पॉलिश खरीदने गया,
तो दुकान मालिक ने भिखारी समझकर उसे फटकारा.
अपमानित इम्मानुएल ने
उस दुकान के काउंटर पर पैसे पटके.
फिर दुकानदार ने माफ़ी मांगी.
पर इम्मानुएल उस अपमान को कभी नहीं भूला.



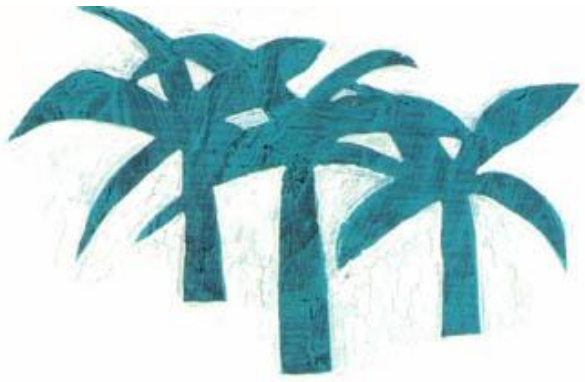
जब माँ कम्फर्ट की तबियत ज्यादा खराब हुई,
तब इम्मानुएल ने घर जाकर उनकी देखभाल की.
पलंग पर लेटे-लेटे, क्रिसमस वाले दिन माँ ने बेटे से कहा,
“दूसरों का आदर करना, अपने परिवार की देखभाल करना,
कभी भीख मत मांगना. और कभी हताश मत होना.”

अगले दिन सुबह
इम्मानुएल की प्रिय माँ चल बसी.

इम्मानुएल को बहुत दुःख हुआ,
पर माँ के आखरी शब्द उसके लिए एक वरदान बने.
वो उन शब्दों का आदर करके दुनिया को दिखायेगा
कि विकलांग व्यक्ति असमर्थ नहीं होते हैं.
इम्मानुएल का एक सपना बड़ा था.
और उसके लिए एक योजना भी.







इम्मानुएल का दिमाग बहुत तेज़ था.
वो निर्भीक और साहसी भी था.
उसका एक पैर काफी ताकतवर था.
अब उसे सिर्फ एक साइकिल की ज़रूरत थी.
शुरू में किसी ने उसकी मदद नहीं की.
उन्हें लगा कि साइकिल पर पूरे घाना की यात्रा करना,
इम्मानुएल के लिए एक असंभव काम होगा.
फिर इम्मानुएल ने सैन दिएगो, अमरीका
में स्थित एक विकलांग संस्था को पत्र लिखा.





उन्होंने इम्मानुएल के लिए एक साइकिल भेज दी
और साथ में हेलमेट, नेकर, मोज़े और दस्ताने भी!

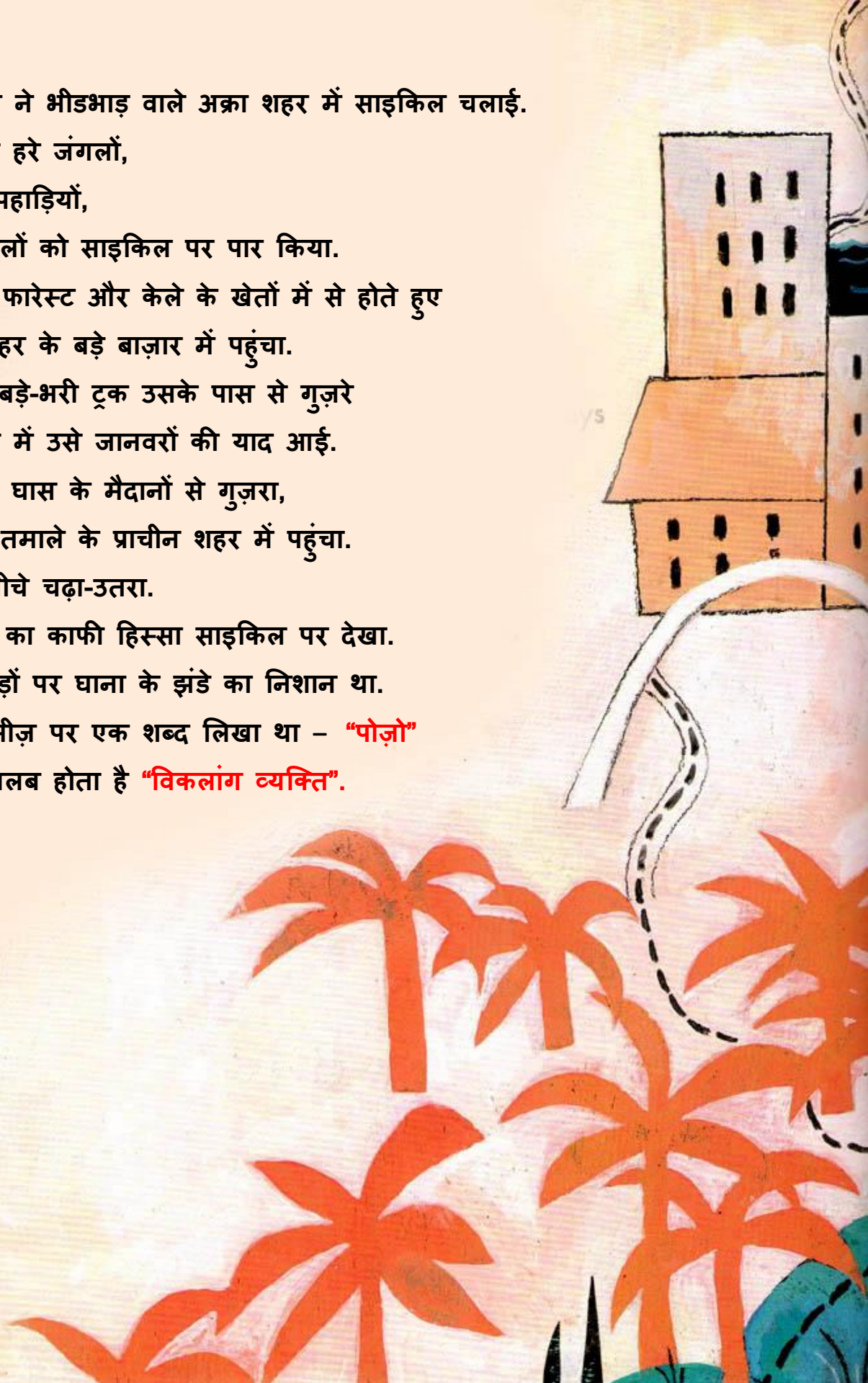


फिर इम्मानुएल, अपनी लम्बी यात्रा की तैयारियां करने लगा.
उसने अपने इलाके के राजा से मिलकर उनका आशीर्वाद भी लिया.

फिर उसने घर-घर जाकर लोगों से सहयोग की अपील की.
अंत में अपने पीछे-पीछे आने के लिए उसने किराए पर एक टैक्सी ली.
टैक्सी में पीने का पानी, कैमरा और उसके अज़ीज़ दोस्त बैठे थे.
फिर इम्मानुएल ने अपने दायें पैर को, साइकिल के फ्रेम से बाँधा.
उसके बाद उसने बाएं पैर से साइकिल के पेडल को जोर से दबाया
और वो आगे बढ़ा.

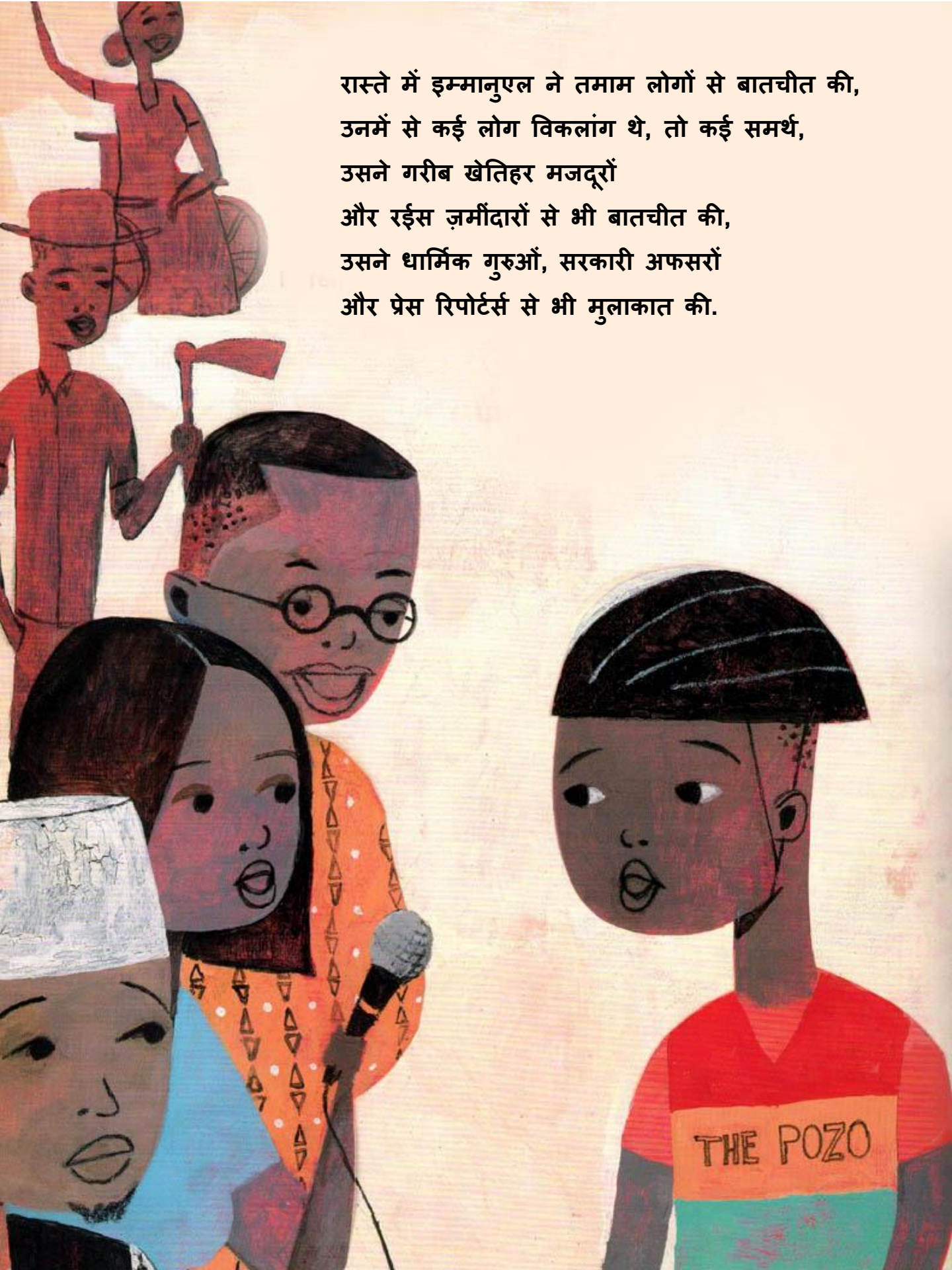


इम्मानुएल ने भीडभाड़ वाले अक्रा शहर में साइकिल चलाई.
फिर उसने हरे जंगलों,
और कई पहाड़ियों,
छिछले नालों को साइकिल पर पार किया.
वो ओडुम फारेस्ट और केले के खेतों में से होते हुए
कुमासी शहर के बड़े बाज़ार में पहुंचा.
हाईवे पर बड़े-भरी ट्रक उसके पास से गुज़रे
घने जंगल में उसे जानवरों की याद आई.
वो विशाल घास के मैदानों से गुज़रा,
और फिर तमाले के प्राचीन शहर में पहुंचा.
वो ऊपर-नीचे चढ़ा-उतरा.
उसने देश का काफी हिस्सा साइकिल पर देखा.
उसके कपड़ों पर घाना के झंडे का निशान था.
उसकी कमीज़ पर एक शब्द लिखा था - "पोज़ो"
उसका मतलब होता है "विकलांग व्यक्ति".

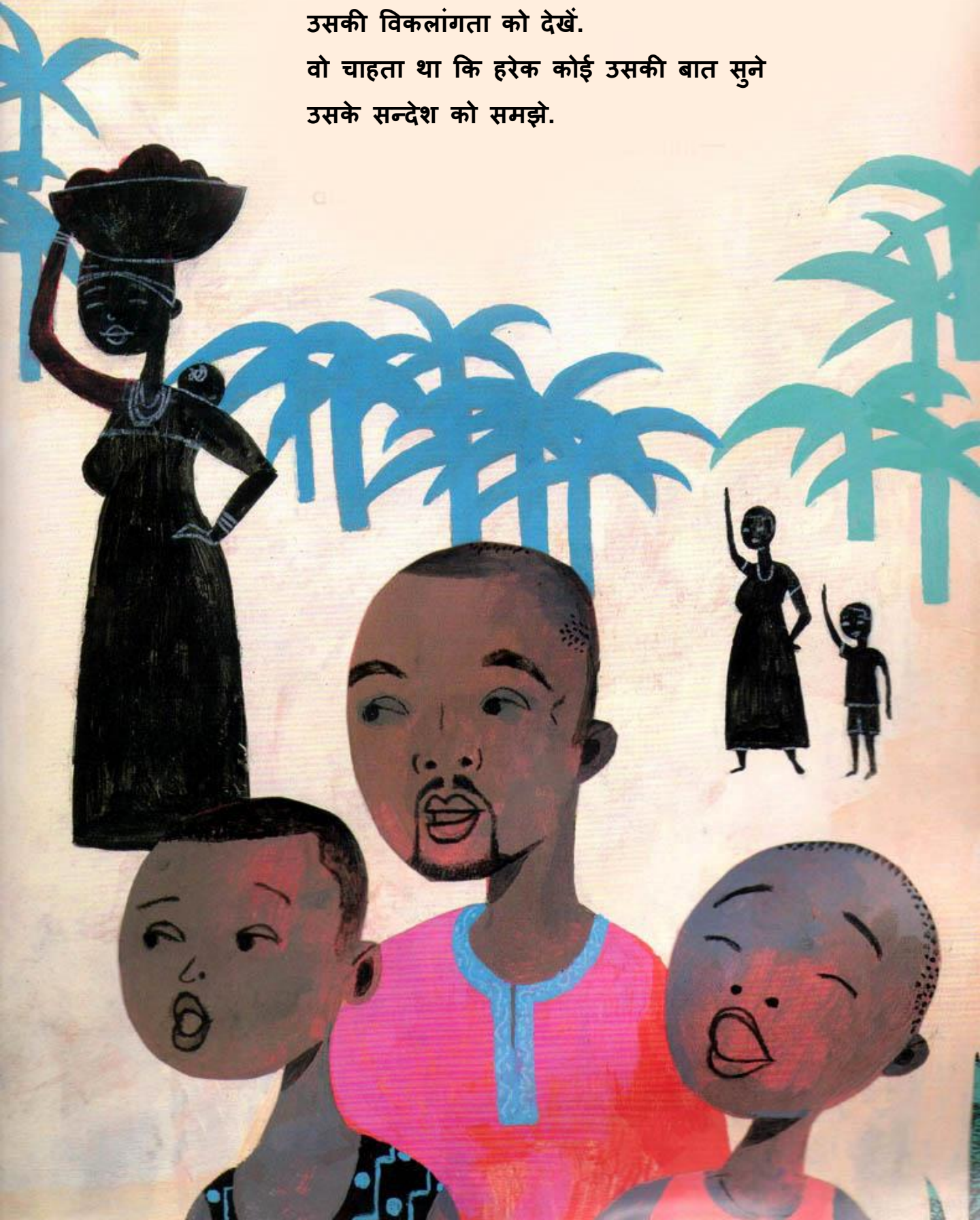




रास्ते में इम्मानुएल ने तमाम लोगों से बातचीत की,
उनमें से कई लोग विकलांग थे, तो कई समर्थ,
उसने गरीब खेतिहर मजदूरों
और रईस ज़मींदारों से भी बातचीत की,
उसने धार्मिक गुरुओं, सरकारी अफसरों
और प्रेस रिपोर्टरों से भी मुलाकात की.

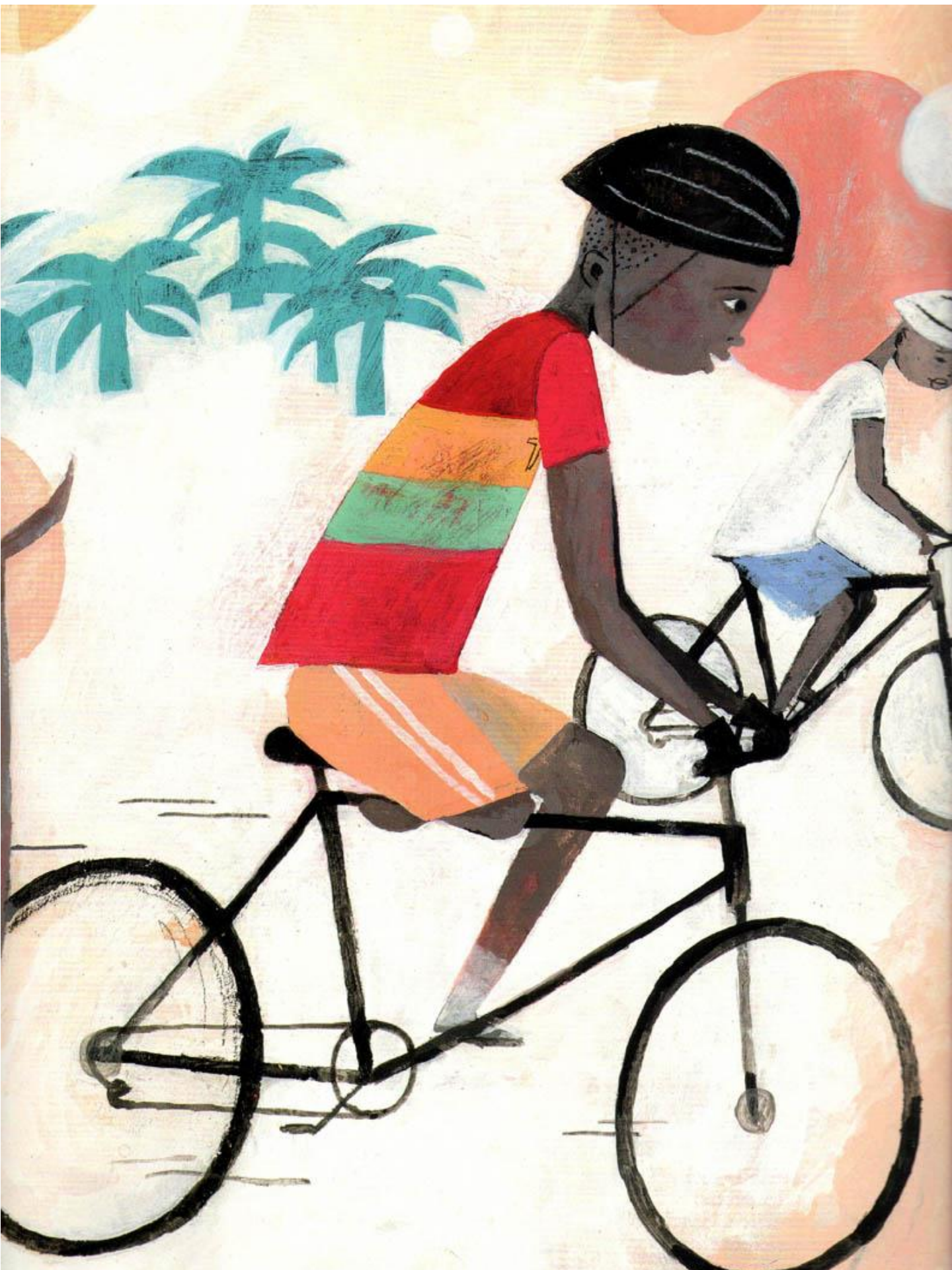


इम्मानुएल चाहता था कि सबलोग उसे देखें -
उसकी विकलांगता को देखें.
वो चाहता था कि हरेक कोई उसकी बात सुने
उसके सन्देश को समझे.



इम्मानुएल जिनता दूर गया,
लोगों का ध्यान उसकी ओर, उतना की अधिक आकर्षित हुआ.
उसे देख बच्चों ने तालियाँ बजायीं.
विकलांग लोग उससे मिलने के लिए अपने घरों से बाहर निकले,
कुछ तो पहली बार ही घर से बाहर निकले!
जिस लड़के को कभी लोग धिक्कारते थे
अब वो राष्ट्रीय हीरो बन गया था.





इम्मानुएल ने अपनी रोमांचक और यादगार यात्रा खत्म की,
वो अक्रा से दक्षिण की ओर समुद्र तक गया
और फिर अक्रा वापिस आया.
चार सौ मील की यात्रा उसने सिर्फ दस दिनों में पूरी की.



पर इम्मानुएल की सफलता उसके भी कहीं आगे गई,
उसने दिखाया कि एक ग़ज़ब का काम करने के लिए सिर्फ एक ही पैर काफी है,
और एक अकेला इंसान चाहे, तो वो दुनिया बदल सकता है.

“इस दुनिया में कोई भी उत्तम (परफेक्ट) नहीं है. हम अपनी ओर से सबसे अच्छा करने की कोशिश ज़रूर कर सकते हैं.”

- इम्मानुएल

लेखक के दो शब्द

इम्मानुएल के प्रयास अभी भी जारी हैं. 2001 में जब वो घाना में पहली बार लम्बी दूरी की साइकिलिंग पर गया, तब वो 24 साल का था. तबसे उसने कई महत्वपूर्ण अंतर-राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लिया है. उसे नायके और ईएसपीएन पुरुस्कार मिले हैं. 2004 में कैरो में उसे ओलिंपिक टोर्च लेकर जाने का सम्मान मिला. उस पर एक प्रेरक डाक्यूमेंट्री फिल्म भी बनी है जिसका नाम है “इम्मानुएलस गिफ्ट”.

2006 इम्मानुएल की साइकिल यात्रा और उसके राजनैतिक संघर्ष के कारण ही, घाना की संसद ने “विकलांग अधिनियम” लागू किया. इस बिल के अनुसार विकलांग लोगों को भी वो सभी सुविधाएँ प्राप्त होंगी जो सामान्य नागरिकों को मिलती हैं. “मैं घाना में अपने विकलांग भाइयों और बहनों के लिए बहुत प्रसन्न हूँ,” इम्मानुएल ने कहा, “पर यह तो बस शुरुआत है.”

इम्मानुएल अभी भी विकलांगों के हितों के लिए लगातार प्रयासरत है. उसने एक स्कालरशिप फण्ड शुरू किया है जो विकलांग बच्चों को स्कूल भेजने में मदद करता है, और ज़रूरतमंदों को व्हीलचेयर उपलब्ध करता है. वो राजनीतिज्ञों, स्वतंत्र संस्थाओं से बातचीत करता रहता है और दुनियाभर में लगातार यह सन्देश भेजता है – विकलांग, असमर्थ नहीं होते.

इम्मानुएल के बारे में आप उसकी वेबसाइट (EmmanuelDream.org) पर और जानकारी प्राप्त कर सकते हैं.

A child with dark skin, wearing a red shirt and black shorts, is walking away from the viewer on a light-colored, slightly curved path. The path leads towards a row of stylized green palm trees in the background. The sky is a pale yellow, and the foreground is a mix of light and dark green, suggesting grass or foliage. The overall style is simple and illustrative.

एक इंसान

दुनिया बदल

सकता है.